Dainik Jagran ND 18/12/2015   P-11

मेधावी बच्चों के लिए विज्ञान भारती लाएगी वेब पोर्टल

अरविंद कुमार द्विवेदी, दक्षिणी दिल्ली

देश भर के स्कूली बच्चों को अपने साइंस मॉडल, आविष्कार व इनोवेशन आदि को प्रदर्शित करने व संबंधित लोगों तक पहुंचाने के लिए देशव्यापी मंच जल्द मिल जाएगा। साइंस को बढ़ावा देने वाली संस्था विज्ञान भारती इसके लिए जल्द वेब पोर्टल लांच करने वाली है। विज्ञान भारती के महासचिव ए जयकुमार ने आइआइटी दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पोर्टल की सारी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। नए साल पर इसे लांच किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय और आइआइटी की भी सहायता ली जाएगी। आइआइटी में पिछले सप्ताह विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिक एक्सपो-2015 के दौरान आयोजित 2000 बच्चों का विज्ञान प्रायोगिक पाठ गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज होने पर मीडिया से बात करते हुए उन्होंने यह जानकारी दी। इस दौरान विज्ञान भारती के अध्यक्ष और आइआइटी दिल्ली के निदेशक मंडल के चेयरमैन डॉ.विजय पी भटकर, आइआइटी दिल्ली के कार्यकारी निदेशक डॉ.क्षितिज गुप्ता और आइआइएसएफ के चीफ कोऑर्डिनेटर डॉ. आशीष शाह भी मौजूद थे।

ए जयकुमार ने बताया कि बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि व उत्सुकता बढ़ाने के लिए विज्ञान भारती ने यह पहल की है। उन्होंने कहा कि अभी देश में ऐसा कोई भी प्लेटफॉर्म नहीं है जिस पर मेधावी बच्चे अपने इनोवेशन व आविष्कार आदि के बारे में लोगों को बता सकें, वैज्ञानिकों को डेमो दिखा सकें या उनका प्रचार-प्रसार कर सकें। इनोवेटिव व क्रिएटिव बच्चों को विज्ञान प्रदर्शनी आदि का इंतजार करना पड़ता है। दूर-दराज के छात्रों को तो यह अवसर भी नहीं मिल पाता है। वर्चुअल मीडिया का इस्तेमाल करके विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने

कहा कि इस प्रैक्टिकल में भाग लेने वाले सभी 2000 बच्चों को पोर्टल का पहला सदस्य बनाया जाएगा। देश भर के सरकारी व निजी स्कूलों को भी पोर्टल पर आने के लिए तैयार किया जाएगा। स्कूलों के प्रिंसिपल पहले अपने स्तर पर बच्चों के इनोवेशन व मॉडल को परखेंगे। उनके स्तर पर खरा उतरने के बाद उन्हें पोर्टल पर अपलोड किया जा सकेगा।

सबसे बड़ा विज्ञान प्रायोगिक पाठ गिनीज बुक में दर्ज : आइआइटी में पिछले सप्ताह विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिक एक्सपो-2015 के दौरान आयोजित 2000 हजार बच्चों का विज्ञान प्रायोगिक पाठ गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो गया है। इसमें दिल्ली-एनसीआर के 40 स्कूलों के नौवीं से 12वीं कक्षा के दो हजार बच्चे शामिल हुए थे। हर स्कूल से 50 बच्चे थे। बच्चों ने 65 मिनट में दो प्रयोग किए थे। दोनों प्रयोग उत्प्रेरण (कटैलिसिस) से संबंधित थे। 40 पर्यवेक्षकों ने कैमरे व एलसीडी की सहायता से प्रयोग देखे। इससे पहले सबसे बड़ा प्रैक्टिकल साइंस लेसन 24 फरवरी को बेलफास्ट में आयोजित किया गया था, जिसमें 1339 छात्रों ने हिस्सा लिया था।

सरकारी स्कूल सिर्फ सात थे : विश्व के सबसे बड़े विज्ञान प्रायोगिक पाठ में जिन 40 स्कूलों के बच्चों ने हिस्सा लिया उनमें सरकारी स्कूल सिर्फ सात थे। विशेषज्ञों ने इस बात पर भी चिंता जताई कि सरकारी स्कूलों में विज्ञान की पढ़ाई के लिए बच्चों को बुनियादी ढांचा जैसे लैब, इक्विपमेंट्स, केमिकल, हार्डवेयर आदि तक उपलब्ध नहीं हो पाता है। फिर वे आगे शोध आदि की पढ़ाई कैसे करें। विशेषज्ञों ने बताया कि सरकार विज्ञान को बढ़ावा देना चाहती है तो उसे सरकारी स्कूलों में इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करना होगा। दरअसल, प्रयोग में शामिल होने के दौरान विज्ञान भारती ने विभिन्न स्कूलों से संपर्क किया था। इसमें पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर तीन मॉक टेस्ट के बाद स्कूलों का चयन किया गया था। सभी स्कूलों के दो-दो यानी कुल 80 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया था। फिर उन शिक्षकों ने अपने स्कूल के बच्चों को प्रयोग सिखाए थे। प्रयोग ऐसे थे जो नौवीं से 12वीं के बच्चों को आसानी से समझ आ सकें। पूरे प्रैक्टिकल की रूपरेखा आइआइटी दिल्ली के रसायन विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. रविशंकर ने तैयार की थी।

आइआइटी दिल्ली में प्रेसवार्ता के दौरान बाएं से डॉ. विजय पी भटकर, डॉ. क्षितिज।

IIT Delhi supercomputer is the fourth fastest in India,166th globally

This 860 teraflops centralised compute system is the largest High Performance Computing (HPC) system across all IITs.

http://indianexpress.com/article/technology/iit-delhi-supercomputer-is-the-fourth-fastest-in-india166th-globally/

New Delhi | Published:December 17, 2015 7:24 pm

.
This 860 teraflops centralised compute system is the largest High Performance Computing (HPC) system across all IITs. - See more at: http://indianexpress.com/article/technology/iit-delhi-supercomputer-is-the-fourth-fastest-in-india166th-globally/#sthash.kCf4khUv.dpuf

Indian Institute of Technology Delhi's supercomputer, which is powered by NVIDIA's GPU Tesla platform, has been featured as the 166th fastest world's supercomputer in the list of Top 500. The newest entry in the global list from India is also the fourth fastest supercomputer in India.

The list captures the 500 most powerful commercially available computer systems known globally was unveiled at SC15, the International Conference for High Performance Computing, Networking, torage and Analysis, held recently at Austin, Texas.This 860 teraflops centralised compute system is the largest High Performance Computing (HPC) system across all IITs and is available to developers, end-users and researchers.

"Ease of programming using CUDA and OpenACC coupled with great performance and lesser infrastructure costs made NVIDIA Tesla computing platform a preferred choice. NVIDIA experts worked closely for about two years with the IIT Delhi team to ensure the success of this strategic initiative," according to a statement.

"We are happy to have commissioned the largest GPU-centric HPC cluster in the nation and among the top few in the world. The system is under active use by a variety of researchers. We are sure the capability multiplication that the system provides will enable them to reach the next level in their research and help solve challenging problems in Atmospheric Science, Molecular Systems, Biology, Nano-systems, and many other areas," said Dr. Subodh Kumar, Associate head computer services center, IIT Delhi.

दुनिया के 500 की लिस्ट में शामिल हुआ आईआईटी दिल्ली का सुपर कंप्यूटर

http://aajtak.intoday.in/story/nvidea-powerd-iit-delhis-super-computer-among-the-top-super-computers-in-the-world-1-846529.html

कैलिफोर्निया की टेक कंपनी एनवीडिया के जीपीयू वाला आईआईटी दिल्ली का सुपर कंप्यूटर दुनिया के 500 सुपर कंप्यूटर के लिस्ट में 166वें नंबर पर है. एनवीडिया ने 2012 में आईआईटी दिल्ली के साथ मिलकर भारत में सुपर कंप्यूटर बनाने का ऐलान किया था. यह भारत का चौथा सबसे तेज सुपर कंप्यूटर है.

दिलचस्प बात यह है कि टॉप 500 सुपर कंप्यूटर की लिस्ट में 70 सिस्टम में एनवीडिया टेस्ला के बनाए हुए हैं. 860 टेराफ्लॉप्स का यह सेंट्रलाइज्ड कंप्यूटर आईआईटी का सबसे पावरफुल कंप्यूटर है जिसे टॉप डेवलपर्स और रिसर्चर्स यूज करते हैं.

इस कंप्यूटर में एनवीडिया का कंप्यूट यूनिफाइड डिवाइस आर्किटेक्ट (CUDA) और ओपेन एक्स्लरेशन (Open ACC) का कॉम्बिनेशन दिया गया है, जिसके जरिए सॉफ्टवेयर डेवलपर्स जेनरल प्रोसेसिंग के लिए CUDA एनेबल्ड ग्राफिक्स यूज करते हैं. खास बात यह है कि CUDA और Open ACC दूसरे सुपर कंप्यूटर के मुकाबले सस्ते हैं.

आईआईटी दिल्ली कंप्यूटर सर्विस के एसोशिएट हेड सुबोध कुमार ने कहा 'हम सबसे फास्ट जीपीयू सेंट्रिक एचपीसी कलस्टर से काफी खुश हैं. फिलहाल यह सिस्टम कई रिसर्चर्स के लिए एक्टिव है और वो इसे यूज कर रहे हैं. हमें उम्मीद है कि रिसर्चर्स को यह अगले लेवल के रिसर्च और प्रोब्लम सोल्व करने में काफी योगदान देगा. इसके अलावा इससे मोलिक्यूलर सिस्टम, बायोलॉजी, नैनो सिस्टम और दूसरे रिसर्च में भी मदद मिलेगी.'

स्कूली छात्रों का सामूहिक प्रयोग गिनीज बुक में दर्ज

आईआईटी दिल्ली में आईआईएसएफ में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने प्रदर्शित किया था सामूहिक प्रयोग

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली में इस महीने की शुरुआत में आयोजित इंडिया इंटरेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयोग को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में जगह मिली है।

आईआईएसएफ ने गुरुवार को जारी बयान में बताया कि गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स ने इस सामूहिक प्रयोग को सबसे बड़ा 'प्रैक्टिकल साइंस लेसन' करार दिया है। उसने कहा कि आईआईटी दिल्ली के परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में विज्ञान भारती संस्था के प्रयासों के तहत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के 40 विभिन्न स्कूलों की नौवीं से बारहवीं कक्षा के 2000 विद्यार्थियों ने उत्प्रेरक से संबंधित प्रयोग में भाग लिया था उसने बताया कि इससे पहले यह कीर्तिमान

आयरलैंड के बेलफास्ट में इसी साल 24 फरवरी को आयोजित सामूहिक प्रयोग के नाम था जिसमें 1339 स्कूली विद्यार्थियों ने भाग लिया था। विज्ञान भारती ने इस कीर्तिमान को तोड़ने का लक्ष्य बनाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स से संपर्क किया था, जिसके बाद सामूहिक प्रयोग की 40 प्रबंधकों व तीन स्वतंत्र पर्यवेक्षकों के द्वारा निगरानी की गयी। सभी प्रबंधकों व पर्यवेक्षकों की रिपोर्ट समेत सामूहिक प्रयोग की वीडियो फुटेज की छानबीन करने के बाद गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने इसे आधिकारिक तौर पर शामिल करने की घोषणा की।

केंद्रीय विज्ञान व तकनीक तथा भूविज्ञान मंत्री डॉ हर्ष वर्धन ने स्कूली विद्यार्थियों द्वारा कीर्तिमान बनाये जाने को देश के लिए गौरवशाली बताते हुए कहा, 'मैं इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में शामिल हुए सभी विद्यार्थियों को सलाम करता हूं और गौरव के इस क्षण को समस्त देशवासियों के साथ साझा करता हूं।' उन्होंने कहा, 'रिकॉर्ड बनाने वाली इस उपलब्धि से देश के स्कूली विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। इससे वह देश के लिए और उपलब्धियां हासिल करने के लिए प्रेरित होंगे।'

Nai Duniya ND 18.12.2015 P-02

जनवरी 2016 तक होगी बनकर तैयार, 33 लाख रुपए के खर्च में से 8 लाख आईआईटी दिल्ली से मिले

आईआईटी छात्रों को इलेक्ट्रिक कार के लिए फंड की दरकार

शैलेन्द्र सिंह >> नई दिल्ली

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली के ऑटोमोबाइल क्लब को इलेक्ट्रिक फॉर्मूला रेसिंग कार के लिए फंड की दरकार है। बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए आईआईटी, दिल्ली का ऑटोमोबाइल क्लब एक ऐसी कार तैयार कर रहा है जो प्रदूषण के मोर्चे पर पर्यावरण हितैषी होगी और सुरक्षा दृष्टि से इस कार में ड्राइवर के नाकाम होने पर रिजनरेटिंग ब्रेकिंग सिस्टम के जरिए ब्रेक लगा पाना संभव होगा। आगामी जून 2016 में फॉर्मूला स्टूडेंट यूनाइडेट किंगडम नामक प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए इस कार को जनवरी, 2016 तक तैयार किया जाना है और डिजाइन तैयार करने के बाद अब इसके निर्माण के लिए फंड जुटाने की कोशिश तेज कर दी गई है।

■ ऑटोमोबाइल क्लब के अंतर्गत 55 विद्यार्थियों की टीम तैयार कर रही है फॉर्मूला रेसिंग कार

■ पर्यावरण हितैषी कार के लिए डिजाइन तैयार अब निर्माण कार्य होगा शुरू

आईआईटी दिल्ली के ऑटोमोबाइल क्लब में शामिल 55 विद्यार्थियों व दो शिक्षकों की टीम द्वारा तैयार की जा रही इस कार से पहले ये क्लब इससे पहले पांच पेट्रोल आधारित रेसिंग कार सफलतापूर्वक तैयार कर चुका है। क्लब की ओर से इस प्रोजेक्ट की मार्केटिंग टीम में शामिल बीटेक इन टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी द्वितीय वर्ष के

छात्र हितेश खत्री व पुनीत कुमार ने बताया कि इस कार को तैयार करने के पीछे हमारा लक्ष्य जहां एक ओर अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का नाम रोशन करना है वहीं दूसरी ओर हमारी कोशिश है किए जिस तरह से समूचा विश्व पर्यावरण को लेकर चिंतित है उसे ध्यान में रखते हुए रेसिंग कारों के स्तर पर भी पर्यावरण हितैषी कार के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो।

हितेश ने बताया कि इस प्रोजेक्ट को लेकर डिजाइनिंग का काम पूरा करने के बाद अब इस पर आने वाली लागत के मोर्चे पर काम जारी है। उन्होंने बताया कि इस प्रोजेक्ट पर करीब 33 लाख रुपए का खर्च आने का अनुमान है और ऐसे में आठ लाख रुपए का फंड आईआईटी की ओर से प्रदान किए गए हैं और शेष फंड के लिए हम सहयोगियों की तलाश कर रहे हैं।

इलेक्ट्रिक कार की खूबियां

आईआईटी छात्रों द्वारा तैयार की जा रही इस कार में कार कार्बन फाइबर का इस्तेमाल किया जाएगा। इसके अलावा इसका ब्रेकिंग सिस्टम ड्राइवर के साथ-साथ रिजनरेटिंग ब्रेकिंग सिस्टम के तहत भी काम करेगा। छात्रों की ओर से इस सिस्टम को वाईफाई तकनीक आधारित बनाया जा रहा है ताकि कार के बाहर से भी इसके ब्रेकिंग सिस्टम को कंट्रोल किया जा सके। इसी तरह इलेक्ट्रिक कार होने के नाते इस कार में इस्तेमाल की जाने वाली बैटरी न सिर्फ हल्की होगी बल्कि ये अन्य उपलब्ध इलेक्ट्रिक कारों की अपेक्षा जल्दी चार्ज हो जाएगी।

Pioneer ND 18/12/2015 P-05

IITs uncover causes of maili Ganga

PNS ■ NEW DELHI

The consortium of seven IITs, which prepared the Ganga River Basin Management Plan-2015 (GRBMP-2015), has pointed out to the overuse of natural resources of the basin and highlighted issues like discharge of pollutants into terrestrial and aquatic environments, reduction in water-holding capacities and replenishment of water bodies among others.

The Water Resources Ministry, for its part, launched Nirmal Ganga Sahbhagita, which is an initiative to assist the Urban Local Bodies (ULBs) and Executing Agencies located on the banks of the Ganga for achieving the objective of Clean Ganga.

Throwing light on the high population density of the Ganga basin the report by the IITs highlighted the strong demand and competition for natural resources, including water for domestic use and irrigation, and most of the basin tributaries are regulated by barrages. Fisheries along the river are of considerable economic value and their output makes a major contribution to regional nutritional needs.

To add to the above, 260 million litres of industrial wastewater, also largely untreated, are discharged by hundreds of factories, while other major pollution inputs include runoff from the more than 6 million tonnes of chemical fertilisers and 9,000 tonnes of pesticides applied annually within the basin.

The report also cautioned against mutilation of rivers by piecemeal engineering operations besides threats to geological processes in the basin.

It called for maintaining environmental flows in all rivers and tributaries of the Ganga River System to fulfil their geological, ecological, socioeconomic and cultural functions. The report emphasised that all existing, ongoing and planned anthropogenic activities in the river basin shall be reviewed or scrutinised in a transparent, inclusive manner with consensus of all affected people and stakeholders.

Meanwhile, Nirmal Ganga Sahbhagita, aimed at sensitising the ULBs on the pollution in the Ganga arising primarily due to dumping of solid waste in the river/nallas and to involve them in a long term engagement in stoppage of the solid waste flow from nallas/drains to the river.

The expenditure on cleaning the Ganga during 2015-16 (till Oct 31, 2015) is ₹760 crore, ₹326.95 crore in 2014-15, besides ₹303.95 crore in 2013-14 and ₹191.52 crore in 2012-13 respectively. This was informed by Minister for Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation Uma Bharti in a written reply in the Lok Sabha on Thursday.

No Service here, IITians Flock to Tech Product Startups Space

Shashwati.Shankar
@timesgroup.com

Mumbai: Kamal Kumawat, an electrical engineering student at IIT Bombay and founder of cash-back platform dealwithus.in, thinks it is better for students to focus on creating technical products as service-oriented startup space gets saturated. "In my wing, there are 10 rooms out of which 4 rooms have service-oriented startups that are funded, one of them closed down and the others are struggling for funding," said the 22-year-old. "There is no point in aggregating services and entering a marketplace that is so full."

Kumawat's thoughts echo the sentiment of several entrepreneurial students in the campus. Students and angel investors in IIT Bombay say there has been a decline in service-oriented startups and a rise in technical product-based startups.

◐ NEED OF THE HOUR

There is no point in aggregating services and entering a marketplace that is so full

KAMAL KUMAWAT
Founder, dealwithus.in

"We are seeing ideas oriented in the healthcare space where students have created devices for detecting high risk pregnancy in women, mobile apps for detecting pneumonia...(and) defence devices for detecting underground mines," said Aparna Rao, senior project manager at Desai Sethi Centre for Entrepreneurship, a pre-incubation support centre in the campus.

Other ideas and proven concepts that Rao mentioned include students reducing ewaste by recycling, upgrading and modifying existing laptops, improvement in sound quality for concerts using wifi connections and creating wearable devices that convert cell phones into temporary speakers.

At Society for Innovation and Entrepreneurship (SINE), which is presently incubating around 26 startups, biomedical, cleantech and fintech startups are a majority. "The rise in biomedical startups has been so high that we plan on establishing a bioincubator in the next six months," said Poyni Bhatt, COO at SINE. More than half of the startups in the incubator have seen angel investments earlier this year. However, investments in hardware-oriented startups usually take time, she said.

Grishma Unnikrishnan, an entrepreneur at SINE and the founder of Med-Prime Technologies, said creating products like a cost-effective infusion monitoring system, mobile phone-based microscopes, and automated blood typing devices will fuel manufacturing in India, instead of importing medical devices from western markets.

Entrepreneurs in SINE associated with the biotech and cleantech startups claimed that venture capitalists had shown a growing interest in healthcare and green devices. However, presently there were limited avenues for funding hardware startups, they said.

Divyansh Chug, coordinator at E-Cell, said there is no visible decline of service-oriented startups. "However, hardware startups are currently on the rise, but they take time and investors are usually apprehensive," he said.

Chug said tech geek social responsibility projects have gone up and students are focusing on elevating the status of the under privileged and the differently abled. Investors Zishaan Hayath, founder of Powai Lake Ventures, and Rehan Yar Khan, founder of Orios Venture Partners, both assert that tech product-oriented startups are on the rise and service-oriented startups are declining at IIT-Bombay.

THINKSTOCK

Humanities at IIT

The IIT Madras has invited applicants for its five year integrated Master's in development studies and in English

studies programmes. The final examination of the +2 system conducted by a central or state board recognised by the Association of Indian Universities, or either an intermediate or a two-year pre-university examination conducted by a board or a university recognised by the Association of Indian Universities, or final examination of the two-year course of the joint services wing of the National Defence Academy. For more details, visit the official website.

Times Of India ND 18/12/2015   P-07

Sundar plans to spread net

Targets 2mn Developers, Getting More Women To Tech World

TIMES NEWS NETWORK

Sanjeev Rastogi

GUIDING FORCE: Pichai stressed on figuring out the next wave

New Delhi: For a large section of students gathered at Shri Ram College of Commerce, the internet and Google have been near synonymous. "It was my homepage when I first started using the net," says Delhi Public School, RK Puram student, Siddharth Garg. Their emails are Gmails, and Google is both noun and verb. But Google CEO Sundar Pichai plans for further growth—bringing the net to millions by making 500 railway stations WiFi-enabled, nurturing two million developers, bringing more women to the world of technology, and staying relevant by "figuring out what the next wave is".

Around 2,500 school and college students attended Pichai's talk at SRCC on Thursday afternoon. They extracted a promise from him of an online poll to pick the name of the next Android OS. Questions had been screened and picked in advance; some were "video questions" screened from other locations, including Indian Institute of Technology, Kharagpur, where Pichai was a student. Vedika Gupta and Saurabh Punhani, both from SRCC, were glad that Google picked their college—"Commercees" as Punhani puts it—"instead of an IIT".

Replying to a question posted on social media on why several of Google's products aren't available in India, Pi-

chai said now there is an "opportunity to do things first in India and then take it global." Youtube Red isn't available in India yet but Youtube offline was launched here first.

Google's India plans will also be aided by a new campus in Hyderabad. At least some kids hope to work with Google. Krishna Arora from GD Goenka, Vasant Kunj, does. Garg wanted to ask, "What [he] should do to be Pichai."

Harsha Bogle moderated the interaction and relayed some questions on his early life to Pichai. The "rapid fire" session revealed that Pichai bought his first phone in 1995-96, his first smartphone in 2006, has 20-30 smartphones lying about his home now. He thinks "coding should be strongly encouraged"; and the first software he'd developed was "so-

me game", likely "elementary chess"; he didn't score enough in Grade XII to get into SRCC.

Pichai didn't start out as a software engineer. SRCC's Saumya Joshi wondered if he ever felt insecure when he made a career switch and found colleagues who already knew much. "If you feel insecure working with people who are better than you, it pushes you to do better. If you're comfortable, you don't push yourself."

Ruchika Salwan from Delhi University's department of computer science wanted to know how Pichai's vision is different from that of Google's founders, Larry Page and Sergey Brin. "They are still involved and we share the same aspirations. And debate is how we solve problems," he replies.

Miranda House student, Shreya Verma, wanted to

'Will ask mom'

A question that stumped Sundar Pichai on his first India visit as Google CEO was whether the popular mobile operating system Android can be named after an Indian dessert! A smiling Pichai replied he will ask his mother for suggestions and Google can even go for an online poll. Some of the suggestions that came at the event itself included 'peda', 'neyyappam' and 'nankhatai'. Previous versions of Android OS have been named after sweets like Donut, Eclair and Kitkat. PTI

know what plans Pichai has for bringing more women to technology. "There are very few women in the sector. That's a global problem but more pronounced in India," he says. He mentioned the 'Internet Saathi' programme intended to reach women in rural areas.

Pichai believes that the "startup culture has really taken hold here and entrepreneurs can build things in India and globally." He said, entrepreneurs here "seem not that different from those in the Silicon Valley." He argues India has had a "education system that has [favoured] rigourous academic values over [a] creative approach."

Akshansh Gupta, the 95% disabled JNU scholar who recently received his PhD in computer science, also attended Pichai's talk.

Deccan Herald ND 18/12/2015   P-12

'Only 6.67% Indian institutes headed by women'

NEW DELHI: There is a significant shortage of female academic leaders in the higher education system of the country, as only 6.67 per cent of Indian institutes are headed by women, says a report.

According to Edushine Advisory Group, a strategic management consulting firm specialising in higher education in the country, India's Gender Inequality Index (GII) is 0.563 which is worse than the world average of 0.450.

The report which assessed percentage of females in positions of influence such as Vice-Chancellors or Directors in 810 institutions of higher education in India, found that only 6.67 per cent institutions (54 out of 810) are headed by females.

"Recently, government regulations have increased female participation in corporate board rooms, however, it is important for us to create female academic leaders who can in-spire young girls during their study days to take up leadership roles," EduShine Managing Partner Kalpesh Banker said.

Though gender gap in academic leadership is a global phenomenon, India lags much behind the developed countries like the United States, Australia and the United Kingdom which have female participation at leadership level at 18 per cent, 21 per cent and 17 per cent, respectively.

Female participation at top positions in Indian universities is negligible. Moreover, the most prestigious institutions in India have no female academic heads, the report said.

It noted that Central universities have the highest female participation as 9.8 per cent institutes (5 out of 51) are headed by females, while, State universities have only 8.61 per cent (28 out of 325).

Institutes of national importance that includes IITs, NITs, IISERs, AIIMS have only 5.47 per cent (4 out of 73) representation at director level.

Interestingly, India has registered significant progress in female enrollment in education.

In 1950-51, India's female enrollment ratio was 14 females per 100 males. By 2013-2014, it has improved to 80 females per 100 males, the report added.

The institutions covered in the research includes all the universities categorised into Central University, State University, State Private University, Deemed University, Institute of National Importance and IIMs.

PTI

AIPMT exam will go hi-tech to stop mass cheating replay

Brajesh Kumar
■ letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: The Central Board of Secondary Education (CBSE) will be all geared up to ensure that no incident of mass cheating occurs during the All India Pre-Medical Entrance Test (AIPMT), to be conducted on May 1 next year.

The HRD ministry, in a meeting with the CBSE, has finalised a foolproof plan — which will include arming over 1,000 examination centres across the country with handheld metal detectors, mobile phone jammers and fingerprint scanners — to prevent a repeat of the entrance test's notorious 2015 episode.

The last medical entrance test, taken by over six lakh candidates, was cancelled and re-conducted on the Supreme Court's order when reports emerged of students at certain centres of Haryana indulging in mass-cheating by stitching Bluetooth

FOOLPROOF
■ Metal detectors, jammers to check use of two-way mics
■ Fingerprint scanners to catch proxy applicants
■ Video recording of the 3-hour exam at centres across India
■ Cellphones, watches banned. Pens would be provided at the exam centre
■ Full-sleeved shirts, shoes not allowed

devices and sophisticated microphones into their clothes.

While the metal detectors and jammers (to be used with the government's permission) will check the use of audio-visual devices, the use of fingerprint scanners will prevent the entry of fraudulent candidates into medical colleges.

"The applicants, at the time of making the application, will need to send scanned fingerprint impressions along with their photographs. At the centre, their fingerprint impressions will be collected again through inkless pads," an official told HT. This will ensure that the candidate who filled the application and the one who took the examination are the same, he added.

Considering that some students had earlier scanned their question papers and passed them to accomplices outside through sophisticated audio-visual devices, the CBSE has now decided to bar candidates from carrying phones, watches and even pens into the examination centre.

"Although handheld metal detectors can discover such devices at the centre's entrance, invigilators will also be given flashlights to ensure candidates do not stuff tiny microphones into their vests or ears. We will be providing candidates with pens at the centre," the CBSE official said.

AIPMT exam will go hi-tech

Voicing his approval for the CBSE's plan, former NCERT director and educationist JS Rajput said, "The CBSE has enough resources to make foolproof arrangements. Moreover, it collects over ₹1,000 from each candidate... Also, procuring metal detectors and fingerprint scanners for one day is a very much feasible solution. It should not be a problem."

However, not everybody seemed excited about the security arrangements being made. "Such elaborate arrangements could turn out to be a hassle for students, who will suffer for what some cheats did in the previous exam. I hope CBSE ensures that there is no chaos at the centres," Vaibhav Singh, a student, said.

NIT-C plans state's first research park

http://timesofindia.indiatimes.com/city/kozhikode/NIT-C-plans-states-first-research-park/articleshow/50213663.cms

KOZHIKODE: In a move that would provide a boost to the startup and innovation ecosystem in the state, the National Institute of Technology, Calicut (NIT-C) is planning to set up a research park at its Chathamangalam campus to provide world class infrastructure for Research and Development (R&D) for startups and tech- firms and to foster broader industry- academia linkages.

The institute has sought Rs 50 crore as initial funds from the Ministry of Human Resource Development (MHRD) for the research park. Once realized, it would be the first such exclusive zone for research and development to be established at any higher education institution in the state.

The proposed research park would provide high quality R&D base for companies and enable industry, NIT-C faculty and students to take up joint research projects. It would also help technology startups and other firms to engage in product development or software development and promote industry- academia collaborations and build a research and innovation ecosystem.

"The MHRD has decided to allot funds for premier academic institutions to set up research parks, startup centres and technology business incubators (TBIs) in institutions like IITs, IIMs and NITs. We have submitted our proposal and are hopeful of getting the needed funds as NIT-C has a successful track record in setting up and operating a Technology Business Incubator (TBI) on the campus for the last one decade," Abraham T Mathew, Dean (Research and Consultancy), NIT-C said.

He said that already the TBI at NIT-C has incubated 48 companies out which 34 have graduated and moved out of the campus to set up their own facilities. Some of the successful startups have even branched out to multiple locations and a software development firm incubated by us in Chathamangalam panchayat employs 40 developers, he added.

"We intend to set up a dedicated space for R&D along with facilities for fabrication and testing along with technology-related support which is crucial for upcoming companies. The research park would enable the firms to collaborate with NIT-C and leverage our expertise in the field," he added.

He said that the proposed research park will be modelled on a similar facility currently operational at IIT-Madras. According to reports, MHRD is planning to initially set up 50 research parks in the country.

Already the institute has been selected for funding under the phase- 2 of the Technical Education Quality Improvement Programme (TEQIP) programme making it eligible for Rs 12.5 crores of funding.

17 technical institutes win awards in AICTE-CII survey

A total of 17 technical institutes from across India managed to bag majority of the awards in this year's AICTE-CII Survey of Industry-Linked Technical Institutes which included ten awards in degree category and six in diploma category. In degree category, there were eight awards in engineering and one each in pharmaceutical and architecture categories. The engineering awards included one award for best National Institute of Technology (NIT) which was won by NIT Trichy. There was one award in the emerging category in engineering which went to Chennai-based Vel Tech Multi Tech Dr.Rangarajan Dr.Sakunthala Engineering College.

The award for best industry-linked management institute was won by Mumbai-based Prin LN Welingkar Institute of Management Development and Research while there was no winner in the emerging category of management. In engineering, the other winners were DKTE Society's Textile and Engineering Institute, Thiagarajar College of Engineering, Sona College of Technology, RMK Engineering College and Sri Sai Ram Engineering College.

The award in the pharma category was won by SVKM's Dr Bhanuben Nanavati College of Pharmacy.

Vijay Thadani, Chairman, CII National Committee on Higher Education said, "The survey's initiative to map the industry linkages of technical institutes has grown in participation every year. By providing an opportunity to institutions to meticulously document their industry linkages, and substantiate the information with evidence, it has brought in an environment of authenticity and veracity into the exercise, which greatly benefits the institutions involved."

Commenting on the survey, AICTE Chairman, Prof Anil D Sahasrabudhe said, "The survey of industry linkages of technical institutions is a good way of recognising and rewarding institutes for their good work with industry. For education to be meaningful, it should be in sync with what the industry requires. Since this survey brings industry experts at every step of the evaluation process, the validation that it provides to institutes is valued by them."

The best performing institutes were selected after a five-and-half month long online survey and a subsequent four-month jury process. More than 60 experts from industry and academia took part in the jury process which included visits to institutes for on-site assessment of industry linkages of institutes.

The fourth edition of the survey saw the number of participating institutes increase from 814 in 2014 to 901. This number was 355 in 2013 and 156 in 2012. The discipline-wise submissions rose from 2744 in 2014 to more than 3000 this year. This count was 1124 in 2013.

As many as 21 awards were bagged by 17 technical institutes from across the country in the fourth edition of the annual AICTE-CII Survey of Industry-Linked Technical Institutes.

The institutes were awarded in a survey jointly conducted by India's premier bodies the All India Council for Technical Education (AICTE) and Confederation of Indian Industries (CII) earlier this month.

"The survey of industry linkages of technical institutions is a good way of recognising and rewarding institutes for their good work with industry. For education to be meaningful, it should be in sync with what the industry requires. Since this survey brings industry experts at every step of the evaluation process, the validation that it provides to institutes is valued by them," AICTE chairperson Prof Anil D Sahasrabudhe said.

Vijay Thadani, chairperson of CII National Committee on Higher Education, said, "The survey's initiative to map the industry linkages of technical institutes has grown in participation every year. By providing an opportunity to institutions to meticulously document their industry linkages, and substantiate the information with evidence, it has brought in an environment of authenticity and veracity into the exercise, which greatly benefits the institutions involved."

Thirteen out of the total 21 awards were presented under various categories like degree, diploma and mentor. The awards included 10 in degree category and six in diploma category.

In degree category, there were eight awards in engineering and one each in pharmaceutical and architecture categories.

The engineering awards included one award for best National Institute of Technology (NIT) which was won by NIT Trichy. There was one award in the emerging category in engineering which went to Chennai-based Vel Tech Multi Tech Dr Rangarajan Dr Sakunthala Engineering College.

In engineering, the other winners were DKTE Society's Textile and Engineering Institute, Thiagarajar College of Engineering, Sona College of Technology, RMK Engineering College and Sri Sai Ram Engineering College.

The award for best industry-linked management institute was won by Mumbai-based Prin LN Welingkar Institute of Management Development and Research. There was no winner in the emerging category of management.

The award in the pharma category was won by SVKM's Dr Bhanuben Nanavati College of Pharmacy.

The best performing institutes were selected after a five-and-half month long online survey and a subsequent four-month jury process. More than 60 experts from industry and academia took part in the jury process which included visits to institutes for on-site assessment of industry linkages of institutes.

The fourth edition of the survey saw the number of participating institutes increase from 814 in 2014 to 901. This number was 355 in 2013 and 156 in 2012. The discipline-wise submissions rose from 2,744 in 2014 to more than 3,000 this year. This count was 1,124 in 2013.

IIT-K alumni devise way to cut human errors in factories

http://timesofindia.indiatimes.com/city/lucknow/IIT-K-alumni-devise-way-to-cut-human-errors-in-factories/articleshow/50225641.cms

LUCKNOW: A group of IIT-K alumni working in various sectors have come together to promote innovation to make the life of a common man better.

The 80 alumni of the 1982 batch have collaborated with their alma mater, IIT-Kanpur, to form IKAN Innovations and Technologies, which aims to access innovative technologies and leverage research, making the earth a better place to live in.

The first technology that they have successfully completed is one that reduces human errors in the metal, especially steel, industry.

The technology, a radio-frequency identification (RFID) asset tracking system, can reduce production time by 25% in a steel casting factory. The company can track the work in progress of various articles in their harsh environment.

Renowned mathematician and IIT-K professor Manindra Agarwal is also part of the team, which has been approached by Indian Railways to help them resolve the problem of inter-operability of radio frequency devices in trains carrying goods. The problem has led to safety issues that need to be solved.

IKAN directors Ajit Dass and Rakesh Mahna told TOI that the team zeroed in on one particular technology to trace the product stage for a steel casting manufacturing company in UP.

"Now, the company can locate and monitor the work in progress and if anything at any stage goes wrong or a product is stuck at a particular stage for a long time, alarms would go on," said Dass.

Consulting partners Samarth Narain and Alok Agarwal said this was the first time that RFID technology was used in the metal industry. "The technology developed by the IKAN team acts as an effective decision support system to increase efficiencies in the factory," said Narain.

Dean of resources and alumni at IIT-Kanpur Prof BV Phani, who headed IIT-K's innovation and incubation centre for 10 years until a month ago, told TOI, "IIT-Kanpur has entered into a non-exclusive agreement with IKAN to act as an industry academia interface in promoting innovation, commercializing existing technologies and forseeing industry problems which may be addressed by the faculty at IIT-Kanpur."

So how did it start? IKAN is the outcome of an email group which the team had created to exchange information and help a physically challenged batch mate.

"While finding ways to help him, it struck a few of us to start a venture where we can give impetus to innovation and have a larger beneficial impact on society. We looked at the basic problems on our planet, with the motive of using technology as a catalyst to solve them. And IKAN was formed," said Dass.

Besides, the team is addressing the problem of shortage of clean water in rural areas, beginning from Kanpur, and plans to take up senior citizen care in a scientific manner.

Elaborating on the problem faced by Indian Railways, consulting partner Sudhi Raj Verma said the IKAN network acted as a bridge to connect Indian Railways with the Telecommunications Standards Development Society, India (TSDSI). The Society has the expertise to solve the problem Indian Railways was facing, through standardization, he said.

"IKAN acted as a bridge and approached TSDSI, which immediately took up this issue. With this, pilots of goods trains will be able to procure locomotives from the same vendor. This will help them in managing all engines from sitting in the main engine," said Verma.

For its next project, the team is developing a mobile-based platform and app for the global market to help in recruitment of human resources.

How it works

IKAN members either share any problem from any industry that they come across, with each other or someone asks them for a solution to their problem. They access the latest technology and if required, conduct research. The members leverage their relationships with academia and industry worldwide to come up with a solution that best meets requirements.